रङ्गोत्सव
(२१ एवं २२ मार्च, २०१३)

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र क वाराणसी स्थित पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र के द्वारा प्रकाशित "कलातत्त्वकोश" भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और कलापरम्परा को जानने के लिए जितना आवश्यक है, उतना ही रूपङ्कर एवं मंचीयकला की गतिविधियों या प्रदर्शन कलाओं को समझना और रस लेना भी आवश्यक है। कलाओं के परस्पर अभिसम्बन्ध, परस्पराश्रयता तथा पारस्परिक अन्त:क्रिया की दृष्टि से सभी कलाओं की परम्परा का दस्तावेज़ीकरण, संरक्षण और उनका सर्जनात्मक विकास अपेक्षित है। कलाओं की यह विशाल परम्परा इस विराट् देश में असंख्य रूप में आज भी विद्यमान है। इसका दस्तावेज़ीकरण, संरक्षण और सर्जनात्मक विकास उनकी स्थानिकता में किया जाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वाराणसी आर उसके आसपास के क्षेत्रों में उपलब्ध बनारस अङ्ग की ठुमरी, होरी एवं चैती का विशिष्ट आयोजन "रंगोत्सव" में दो दिवसीय संगीत सन्ध्या का उपक्रम इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा अन्तर् सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र एवं संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के साथ मिलकर दिनांक २१ एवं २२ मार्च, २०१३ को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय-स्थित संगीत एवं मंचकला संकाय के पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर प्रेक्षागृह में किया गया।

दो दिवसीय संगीत संध्या "रंगोत्सव" की प्रथम संध्या में वाराणसी के दो ख्याति-लब्ध कलाकारों की प्रस्तुति हुई। प्रथम प्रस्तुति बनारस घराने के लब्धप्रतिष्ठित शहनाई वादक श्री रमाशंकर जी का रहा। उन्होंने शहनाई वादन का आरम्भ राग मधुवन्ती में मध्यलय तीन ताल तथा द्रुत तीन ताल से किया। इसके पश्चात् प्रसिद्ध बनारसी ठुमरी "कौन गली गये श्याम" का वादन किया। होली के मौसम होने के कारण बनारसी होरी - "मोपे डारो न रंग गिरधारी" तत्पश्चात् चैती "गंगा गीत" की शहनाई पर मधुर प्रस्तुति के द्वारा प्रेक्षागृह में उपस्थित प्रेक्षकों को होली क रस में डुबो दिया।

आपके साथ शहनाई-वादन में संगत कर रहे कलाकार श्री अंसार अली, श्री दिलीप शंकर एवं श्री अतुल शंकर, वाद्ययन्त्र स्वरपेटी पर श्री विजय शंकर तथा तबला पर श्री कैलाश निषाद थे। इनकी समीचीन संगत ने शहनाई वादन को अपेक्षित सहयोग देकर उसे ऊँचाई प्रदान की।

श्री रमाशंकर एवं उनके साथ कालाकारों का स्वागत उत्तरीय एवं माला के द्वारा प्रोफेसर कमलशील, पूर्व संकायप्रमुख, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रोफेसर शारदा वेलंकर, संकाय प्रमुख, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यीय तथा इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र के परामर्शदाता प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी ने किया।

संगीत संध्या "रंगोत्सव" के प्रथम सन्ध्या की द्वितीय प्रस्तुति बनारस घराने के सुप्रसिद्ध गायक पद्मभूषण पण्डित छन्न् लाल मिश्र जी की रही। पं० मिश्र जी ने अपने शास्त्रीय गायन का आरम्भ रूपक ताल एवं राग झिंझोटी में निबद्ध रचना "जय हनुमान पवन कुमार" के गायन के द्वारा हनुमत् स्तवन से किया। इसके पश्चात् इन्होंने शुद्ध कल्याण ग्यारह मात्रा में बन्दिश 'जानकी रमननाथ' का गायन कर प्रेक्षकों की श्रवण की पिपासा को अत्यन्त तीव्र कर दिया। तत्पश्चात् शास्त्रीय होरी "आये खेलन होरी" तथा

सुप्रसिद्ध पारम्परिक होरी "होरी खेलत नन्दकुमार" तथा आधुनिक होरी "रंग डारुंगी-डारुंगी रंग डारुँगी" सुनाकर रसिक श्रोताओं को होरी के विविध प्रकारों से परिचित ही नहीं कराया, अपितु उसकी मधुरता और सौन्दर्य के अनुभव से आह्लादित भी कर दिया। इस अवसर पर चैता, चैती और घाटो का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि चैता पुरुषप्रधान, चैती स्त्रीप्रधान तथा घाटो निर्गुण गायन होता है। इसी क्रम में चैता "अवध में बाजेला बधइया हो रामा" तथा चैती "सेजिया से संइया रुठ गइले कोयल तोरी बोलिया" की मधुर प्रस्तुतियों से फागुन और चैत के सरस वातावरण में रसिकजनों को संगीतरस से भिगो दिया।

बनारस घराने के संगीत का प्रदर्शन हो और ठुमरी के गायन के बिना कार्यक्रम पूर्ण नहीं हो सकता। कार्यक्रम की पूर्णता के निमित्त ठुमरी "अब न बजाओ श्याम" गाकर दर्शकों को वाराणसी की पारम्परिक और समृद्ध शैली का साक्षात्कार करा दिया। पद्मभूषण पं० मिश्र ने बनारस परम्परा के इस संगीत सन्ध्या की प्रथम सन्ध्या का समापन मधुर ठुमरी "होरी खेलें दिगम्बर मसाने में" से किया।

आपके साथ वाद्ययन्त्र पर संगत कर रहे कलाकार, तबला पर श्री ललित कुमार, हारमोनियम पर श्री इन्द्रेश मिश्र, तानपूरा पर सुश्री विष्णुप्रिया तथा स्वरपेटी पर श्री अभिषेक सिंह थे।

पण्डित छन्नूलाल मिश्र ने ठुमरी के सात प्रकारों का निरूपण करते हुए उसके चार प्रमुख प्रकारों को सोदाहरण और सम्पूर्ण सर्जनात्मक समृद्धि में प्रस्तुत कर श्रोताओं को चकित और रसविभोर कर दिया। शेष तीन प्रकारों से भी उन्होंने अन्त में अपने साक्षात्कार में समझा दिया।

रंगोत्सव की प्रथम सन्ध्या के कार्यक्रम का संचालन डॉ० राज कुमार, उपसमन्वयक, अन्तर्-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो० संजय कुमार ने किया।

इस दो दिवसीय संगीत सन्ध्या "रंगोत्सव" की द्वितीय सन्ध्या का शुभारम्भ राजा मानसिंह तोमर संगीत विश्वविद्यालय, इन्दौर के पूर्व कुलपति एवं संगीत एवं मंचकला संकाय के पूर्व संकायप्रमुख तथा ग्वालियर घराना के सुप्रसिद्ध गायक कलाकार प्रोफेसर चितरंजन ज्योतिषी, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी तथा प्रो० संजय कुमार, समन्वयक, अन्तर्-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्द् विश्वविद्यालय के द्वारा वाग्देवी, विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदनमोहन मालवीय तथा पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण से हुआ।

संगीत सन्ध्या "रंगोत्सव" के द्वितीय सन्ध्या की प्रथम प्रस्तुति ख्यातिलब्ध उपशास्त्रीय गायिका तथा संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संकाय प्रमुख प्रो० शारदा वेलंकर का राग मिश्र तिलंग में निबद्ध ठुमरी "तोरे नैना जादू भरे" रही। इसी क्रम में प्रो० वेलंकर ने राग मिश्र काफी में होरी ठुमरी "जिन मारो पिचकारी" सुनाकर दर्शकों को भावविभोर कर दिया। इसके पश्चात् दादरा के क्रम में राम खमाज में निबद्ध दादरा "मोपे डारो न रंग गिरधारी" सुनाकर दर्शकों के समक्ष वृन्दावन की झाँकी प्रस्तुत कर दी। तत्पश्चात् होरी के क्रम में राग मिश्र पीलू में निबद्ध होरी "बीते अवधि सैंया घर नाहीं" सुनाया।

होली के अवसर पर चैता और चैती के गायन की परम्परा रही है। वस्तुतः होली फाल्गुन की समाप्ति तथा चैत के आरम्भ दिन खेली जाती है। अतः प्राचीन लोक परम्परा रही है होली के अवसर पर

चैता और चैती का गायन की। इसी प्राचीन परम्परा का संरक्षण तथा पालन करते हुए प्रो० वेलंकर ने चैती "चैतमासे चुनरी रंगा दे ओ रामा" गाया तथा अपनी अन्तिम प्रस्तुति के रूप में चैतागोरी "सोवत निन्दिया जगाये हो रामा" सुनाकर दर्शको को चैती की पारम्परिकता का साक्षात्कार करा दिया।

आपके साथ वाद्ययन्त्रों पर संगत कर रहे कलाकार, तबले पर श्री कुबेरनाथ मिश्र, सारंगी पर श्री सन्तोष मिश्र, हारमोनियम पर श्री इन्द्रदेव चौधरी, सारंगीपर श्री सन्तोष मिश्र तथा तानपूरे पर सुश्री विदिशा व सुश्री दिव्या थीं।

प्रो० वेलंकर के गायन के प्रारम्भ में कलाकारों को उत्तरीय एवं माला देकर स्वागत प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी, परामर्शदाता, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी, डा० अर्चना कुमार, डॉ० राजकुमार, उपसमन्वयक, अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो० आर० के० मण्डल, धातुकीय अभियान्त्रिकी विभाग, आई० आई० टी०, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा प्रो० ऋत्विक सान्याल, सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक व पूर्व संकाय प्रमुख, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया।

इस रंगोत्वस की द्वितीय सन्ध्या की द्वितीय तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम की अन्तिम प्रस्तुति उपशास्त्रीय शैली के बनारस घराने की सुप्रसिद्ध गायिका डॉ० सुचरिता गुप्ता जी की रही। इन्होंने अपने गायन का प्रारम्भ राग मिश्र खमाज में निबद्ध ठुमरी "कौन गली गये श्याम" से किया। इसके पश्चात् 'रंगभरी एकादशी' या यों कहें 'देवहोली' की पूर्वसन्ध्या पर राग शहाना में निबद्ध होरी "होली खेलूंगी मैं श्याम से डटके" तथा राग काफी में होरी "री मैं कैसे केसर रंग घोरूँ" सुनाकर देवहोली का जीवन्त साक्षात्कार करा दिया। इसके पश्चात् उन्होंने राग मिश्र पीलू में दादरा "लागी बयरिया मैं सो गई ननदी" गाया। अपने गायन के क्रम में चैती की अवतारणा, चैती के प्रकार "एहि ठइयां मोतिया, मृगनैनी तोरी अंखिया" से किया। प्रस्तुति का शिखर रचते हुए उन्होंने राग काफो में होरी धमार "सदा शिव खेलत होरी" सुनाकर प्रेक्षकों को आह्लादित कर दिया। होरी के ही क्रम में आपने होरी चौताल "मनमोहन मोह लिये" सुनाकर सुधी श्रोतागणों को भावविभोर कर दिया। गायन के कम में दर्शकों के मांग पर बारहमासा "दुपहरिया विताईला हो" की भी गाकर मधुर प्रस्तुति की। इस संगीत सन्ध्या एवं रंगोत्सव का समापन राग भैरवी में निबद्ध रचना "हमरी अटरिया पे आजा सवरिया" को गाकर किया।

आपके साथ वाद्ययन्त्रों पर संगत कर रहे साथी कलाकार तबला पर श्री ललित कुमार, सारंगी पर श्री सन्तोष मिश्र, हारमोनियम पर श्री इन्द्रदेव चौधरी तथा तानपूरे पर सुश्री विदिशा व सुश्री दिव्या थीं।

डॉ० सुचरिता गुप्ता के गायन आरम्भ करने से पूर्व उनका और उनके साथी कलाकारों का स्वागत उत्तरीय एवं माला देकर सुप्रसिद्ध कथाकार एवं चिन्तक प्रो० काशीनाथ सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, डॉ० अर्चना कुमार, अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रो० ऋत्विक सान्याल, सुप्रसिद्ध धृपद गायक एवं पूर्व संकाय प्रमुख, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं प्रो० आर० के० मण्डल, धातुकीय अभियान्त्रिकी विभाग, आई० आई० टी०, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया।

"रंगोत्सव" के द्वितीय सन्ध्या का संचालन डॉ० संगीता पण्डित, सहायक प्रोफेसर, संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया तथा कलाकारों, अतिथियों तथा प्रेक्षकों का कृतज्ञता ज्ञापन अन्तर्-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो० संजय कुमार ने किया।

इस अवसर पर इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी परिवार के अतिरिक्त संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्रगण, अन्य संकायों के छात्र-छात्राएं तथा विश्वविद्यालय परिवार के वरिष्ठ सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर पार्श्वनाथ जैन विद्यापीठ के जैन मुनि प्रसमरति विजय जी तथा निदेशक डा० एस० पी० पाण्डेय भी उपस्थित थे।

यह उल्लेखनीय है कि दोनों ही दिनों के कार्यक्रम में विश्वविद्यालय और नगर के रसिक श्रोता समुदाय तथा संगीत के युवकलाकारों और छात्रों से प्रेक्षागृह भरा रहा। विशेषतः युवा छात्र समुदाय के कलाकारों ने ठुमरी, चैती, होरी आदि के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं और उनका समाधान भी पाया।

(नरेन्द्रदत्त तिवारी)